# अन्तर्मुखी और बाह्यमुखी में अन्तर...

निराकार, सर्वज्ञ भगवान शिव के मधुर महावाक्य निकले कि "हे धारणाशील आत्माओं अन्तर्मुखता की प्वॉइन्ट बहुत ज़रूरी है, क्योंकि ज्ञानी और अज्ञानी में यही भेद है कि ज्ञानी अन्तर्मुखी और और अज्ञानी बाह्यमुखी होता है। इसलिए ये आज तुम वत्सों के सम्मुख मैं अन्तर्मुखी मनुष्य और बाह्यमुखी मनुष्य के भेद को स्पष्ट करके समझाता हूँ। बाह्यमुखी मनुष्य का मन अनेक विषयों, पदार्थों, सम्बन्धों इत्यादि की याद में भटकता रहता है। उसकी कर्मेन्द्रियाँ भोगों की ओर आकृष्ट होती रहती है। उसे सृष्टि रूपी झाड़ बीजरूप एक निराकार मुझ परमात्मा का परिचय तो होता ही नहीं। इसलिये, वह 'एकान्त' अर्थात् 'एक '(परमात्मा) के अन्त' में स्थित नहीं हो सकता। बल्कि, मन को अनेक स्थूल तरीकों से बहलाना चाहता है। अर्थात् बाह्यमुखी होता है। जिस मनुष्य का मन मुझ एक अविनाशी पिता, गुरू और अध्यापक परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्ध में जुटा रहता है और मेरी ही सत्वगुणी रचना अर्थात् वैकुण्ठ की याद में लगा रहता है, वही अन्तर्मुखी और एक मुखी अर्थात् एकाग्रचित है।

## अन्तर्मुखी ही धैर्यवत, गंभीरचित्त, निर्संकल्प, निर्भय और दिव्य अनुभव-युक्त होता है

गुण-ग्राही वत्सों, अन्तर्मुखी मनुष्य योग-युक्त होने के कारण स्वतः ही दैवी गुणों से सम्पन्न होता जाता है, क्योंकि उनका सूक्ष्म सम्बन्ध मुझ सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, सर्वशक्तिवान परमात्मा के साथ होता है। वह एक ही बल, एक ही भरोसे पर खड़ा होता है सब के संग रहते हुए भी स्वयं को सब से अकेला अनुभव करता है और इस संसार में चलते भी इस देह से न्यारा और साक्षी महसूस करता है। वह अपने प्रियतम, मुझ परमात्मा की इस प्रिय लीला को देखते हुए भी अडोलचित्त और निर्भय होता है। और, ज्ञान चक्षु द्वारा इस संसार को एक युक्ति-युक्त, रहस्यपूर्वक नाटक समझ कर, स्वयं को एक एक्टर का न्यायी पार्ट बजाते हुए, अनासक्त उपरामचित्त और पार्ट से न्यारा अनुभव करता है, क्योंकि अन्तर्मुखता में स्थित होने के कारण उसे मुझ सम्पूर्ण आत्मा से सम्पूर्ण पवित्र, कर्मातीत अवस्था का रस मिलता रहता है, जो मनुष्यात्मा को देह-भान और बाह्यमुखता से उपराम रखता है। जब मैं परमात्मा ही उस मनुष्य का एकमात्र सहारा हूँ और परमात्मा के साइलेंस बल(शान्ति बल) में ही उस मनुष्य का निश्चय है, और उसका अटूट विश्वास भी यही है कि योग-युक्त आत्मा के सभी कार्य सफल होते ही हैं, तो फिर वो धैर्यवत क्यों न हो? जबकि वह जानता है कि कर्म के अनुसार ही मनुष्य को सुख या दुःख प्राप्ति होती है, और देह से न्यारेपन की अवस्था में परमात्मा की ही याद द्वारा दुःख भी सूली से काँटा हो जाता है तो उस कर्म की गुह्यता को समझते हुए धीरज क्यों न धरें? जबकि वह स्वयं को एक दिव्य शक्ति निश्चय करता है और जबकि वह जानता है कि देवताओं के महावाक्य अर्थ-सहित तथा पवित्र होते हैं, तो शांति की टेव वाला वह अन्तर्मुखी, नेष्ठी मनुष्यात्मा गंभीरचित्त क्यों न हो? जबकि उसे निर्संकल्पता के गुप्त और अनमोल बल का अनुभव है तो क्यों न निर्संकल्प और सदा सन्तुष्ट अवस्था में रहें?

अतः अन्तर्मुखी ही सम्पूर्ण दिव्य गुणों से सम्पन्न, स्वधर्मनिष्ठ, सत्कर्म निष्ठ आचरण आदि की दृष्टि से देवता बन सकता है। और, देह में रहते हुए भी देह से न्यारा, संसार में वरतते हुए भी कमल-पुष्प के समान, वह इस जीवन का सच्चा सुख लूट सकता है। अन्तर्मुखी सुख से प्रफुल्लित होता है। अन्तर्मुखता ही सर्व गुणों की खान है और ईश्वरीय ज्ञान का लक्ष्य है।

## बाह्यमुखता में भेदभाव और आसुरी स्वभाव अन्तर्मुखता में दिव्य प्यार और दिव्य स्वभाव

प्रिय वत्सों, देह-बुद्धि अर्थात् देह-अभिमानी होने पर ही अनेक धर्म, अनेक मतभेद होते हैं। अन्तर्मुखी मनुष्य समझता है कि सब आत्मायें तो वास्तव में एक प्राणनाथ परमात्मा ही के प्राण और प्रिय होने से एक-दूसरे के प्राण और प्रिय हैं। अतः अन्तर्मुखता में स्थित होने से मनुष्यों का आसुरी स्वभाव और कुदृष्टि स्वतः ही समाप्त हो जाती है, मेरे दिव्य, रूहानी प्रेम में बदल जाती है। इसी अन्तर्मुखता में स्थित होने से ही सत्व गुणी, सम्पूर्ण अहिंसक, दैवी संगठन तथा दैवी प्यार वाली, नई सतयुगी सृष्टि की पुनः स्थापना होती है, जिस सृष्टि के विषय में प्रसिद्ध है कि वहाँ 'शेर और बकरी भी एक ही समय पर एक घाट पर पानी पीते थे।' असुर(शूद्र) और देवता(बल्कि,ब्राह्मण) में अन्तर यही तो है कि असुर बाह्यमुखी और देवता अन्तर्मुखी होते हैं। बाह्यमुखी मनुष्य का प्यार देह-बुद्धि पर आधारित होने के कारण विकार-युक्त और दुःखदायक होता है। परन्तु अन्तर्मुखी शुभ-चिन्तक तथा पवित्र-संकल्प वाला होता है। वह दोष-दृष्टि से रहित होता है।

## बाह्यमुखी मनुष्य बाह्य दोष ही देखता अन्तर्मुखी मनुष्य अन्तर्दोष देखता

सम्पूर्ण भाग्य बनाने के लिए पुरूषार्थी वत्सों, बाह्यमुखी और अन्तर्मुखी मनुष्य की दृष्टि में एक महान अन्तर होता है। बाह्यमुखी मनुष्य तो दूसरे मनुष्यों में तथा बाह्य परिस्थितियों में ही दोषारोपण करता रहता है और इस प्रकार अशान्त-चित्त, अधीर और डोलायमान(अस्थिर-बुद्धि) होता है। वह दूसरों के शुभ गुणों पर दृष्टि डालने की बजाय, उनके प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष दोष ही देखता रहता है। परन्तु अन्तर्मुखी मनुष्य का पुरूषार्थ अपने आन्तरिक दोषों को निकालने और दोषों के स्थान पर दिव्य गुण भरने में भी लगा रहता है। वह स्वयं को दोष-रहित बनाते हुए दूसरों के लिए आदर्श बनकर, उनके कल्याण के निमित्त बनता है।

सृष्टि रूपी नाटक के इस रहस्य को जानकर कि सबका पार्ट और सबके संस्कार भिन्न-भिन्न हैं, अन्तुर्मखी मनुष्य परचिन्तन नहीं करता। बल्कि ईश्वरीय वृक्ष के बीजरूप मुझ ईश्वर ही को सदा अपने सामने लक्ष्य रखता है और अपनी ही अन्तिम, सम्पूर्ण, दोष-रहित, तेजोमय अवस्था की ओर बढ़ता रहता है।

समझा, मम् लाडले प्राणों? अन्तर्मुखता के इस सम्पूर्ण रहस्य को समझ कर, इसके अर्थ-स्वरूप में स्थित होने में ही कल्याण है, क्योंकि जितना तुम स्वयं अन्तर्मुखता में स्थित होकर अपने सूक्ष्म बल से अन्य मनुष्यात्माओं को भी अन्तर्मुखता में स्थित करते जायेंगे, उतना ही शीघ्र, दिव्य प्रेम से सम्पन्न, एक ही दिव्य मत वाली सतयुगी देवता-सृष्टि की पुनः स्थापना हो जायेगी।

रायगढ़-चक्रधर नगर(छ.ग.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत मातृ दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के पावन धाम सेवाकेन्द्र पर 'दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' वार्षिक थीम के उद्घाटन कार्यक्रम में बहन जानकी काटजू,महापौर,रायगढ़, बहन वेरोनिका,एडमिनिस्ट्रेटर,जे.एम.जे. मॉर्निंग स्टार हॉस्पिटल, ब्र.कु. नंदिनी बहन, बहन कैसर नसीम,असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर,आरपीएफ रायगढ़, ब्र.कु. राधिका बहन,सह संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़ रायगढ़ तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

डीसा-गुज.। न्यायाधीश मयूर ब्रह्मभट्ट के स्थानांतरण पर उन्हें सेवाकेन्द्र में आमंत्रित कर शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात एवं गुलदस्ता भेंट कर शुभकामनाओं के साथ विदाई देते हुए ब्र.कु. सुरेखा बहन।

पन्ना-म.प्र.। डॉ. भरत पाठक,राष्ट्रीय संयोजक,स्वच्छ गंगा मिशन एवं डॉ. नंदिता पाठक,ब्रांड एम्बेसडर,स्वच्छ भारत मिशन को ईश्वरीय सौगात देते हुए उप सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन।

रायपुर-छ.ग.। 'प्रेरणा' समर कैम्प के समापन समारोह में मंचासीन हैं बायें से ब्र.कु. रश्मि बहन, एडिशनल कलेक्टर उज्जवल पोरवाल, ब्र.कु. कमला दीदी, अति. पुलिस महानिदेशक प्रदीप गुप्ता तथा ब्र.कु. स्मृति बहन।

राजकोट-रविरत्न पार्क(गुज.)। सेवाकेन्द्र पर आयोजित त्रिदिवसीय 'राजयोगी किड्स-समर कैम्प' में सुलेखन, खेल-खेल में योग, ओम ध्वनि, मूल्यों की चिट चैट और सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में बच्चों के साथ ब्र.कु. नलिनी बहन, ब्र.कु. गीता बहन तथा ब्र.कु. डिम्पल बहन।

पुणे-रविवार पेठ(महा.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र के रजत जयंती महोत्सव के तहत रिक्शा चालक, रिक्शा मालिक एवं रिक्शा संघों के लिए आयोजित 'तनाव और व्यसनमुक्त जीवन' कार्यक्रम में श्रीकांत आचार्य,आप परिवहन संघ अध्यक्ष,महा., बापू साहब भावे,कोषाध्यक्ष,रिक्शा फेडरेशन पुणे, आनंद अंकुश,सचिव,आप परिवहन संघ,महा., असगर बेग,अध्यक्ष,आम आदमी रिक्शा,पुणे, एडवोकेट ब्र.कु. नीलिमा खोपे, एडवोकेट ब्र.कु. श्याम झंवर, ब्र.कु. रोहिणी बहन तथा रिक्शा चालकों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

सूरत-कतारगाम(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मातृ दिवस पर वसंत गजेरा फार्म में आयोजित कार्यक्रम में मोना देसाई,ग्लोबल सर्विस कोऑर्डिनेटर ऑफ लाइन्स क्लब इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट, शीला तरपरा,शहर प्रमुख, उषा जाडावाला,चान्स एकेडमी फॉर फिज़िकली आर्टिस्ट फाउण्डर, बीना भगत,एडवोकेट और नोटरी, रितू राठी,एक सोच,एनजीओ फाउण्डर, चेतना गोस्वामी,महिला विकास ट्रस्ट मेम्बर, रोनक बहन ध्रुव,सोशल वर्कर, ब्रह्माकुमारी बहनें तथा अन्य गणमान्य महिलायें उपस्थित रहीं।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ एवं मेधा फाउंडेशन पुणे के तत्वाधान में स्थानीय सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'शाम सुहानी' सुगम संगीत कार्यक्रम में छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन ने संस्थान की गतिविधियों से सभी को अवगत कराया। मेधा फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. सुनील केशव देवधर, इंदौर से गायक संतोष अग्निहोत्री, स्थानीय कलाकार योगेश सिन्हा, संतोष पटेरिया, तबला वादक अजय राव, वायलिन वादक पंडित कमल कामले एवं गिटार पर विकास जैन ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। इस मौके पर आकाशवाणी के पूर्व केन्द्र निदेशक सुरेंद्र तिवारी, बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी से डॉ. बहादुर सिंह परमार, आकाशवाणी के कार्यक्रम अधिकारी चंद्रशेखर शर्मा, कवि अभिराम पाठक, वीरेंद्र खरे अकेला सहित समाज के अन्य गणमान्य नागरिक, शिवेंद्र शुक्ला व ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

बिजावर-म.प्र.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर व्यापारियों के लिए आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में व्यापारी जनों के साथ ब्र.कु. प्रीति बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

रतलाम-पत्रकार कॉलोनी(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा रेलवे हॉस्पिटल के डॉक्टर्स एवं नर्सेस के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में रेलवे हॉस्पिटल की मुख्य चिकित्सा अधिकारी अनामिका अवस्थी, असिस्टेंट नर्सिंग ऑफिसर बहन ज्योति, चीफ नर्सिंग सुपरिन्टेंडेंट बहन रंजना, रतलाम सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य नर्सिंग स्टाफ सहित ब्र.कु. बहनें।